International Journal of Aquatic Science
ISSN: 2008-8019
Vol 13, Issue 1, 2022

छत्तीसगढ़ राज्य के धार्मिक नगरी शिवरीनारायण अंचल का ऐतिहासिक अनुशीलन

(छत्तीसगढ़ के संदर्भ में)

Dr. Pradeep Kumar Kesharwani[1] Aastha Pandey[2]
[1] *Research Guide, Department of History, Kalinga University, Naya Raipur, Raipur Chhattisgarh*
[2] *Research Scholar, Department of History, Kalinga University, Naya Raipur, Raipur Chhattisgarh*

सिंहासन पाट (प्राचीन महामाया मंदिर)

भौगोलिक परिदृष्य

"सिंहासन पाट" छत्तीसगढ़ राज्य के भौगोलिक स्थिति के अनुसार 21.5914^{0}N, 82.3384^0 E पर स्थित है। जिसकी जिला मुख्यालय बलौदाबाजार – भाटापारा से दूरी लगभग 12 किमी. है।

खोज के विषय का विवरण :–

यह स्थान बलौदाबाजार क्षेत्र के सोनाडीह ग्राम से लगभग 3 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यह स्थल शिवनाथ नदी व जमुनया नाला के संगम के बीच स्थित है। इसलिए इसे पाट कहा जाता है। यहाँ पर महामाया देवी का प्राचीन मंदिर है जो अत्यन्त प्रसिद्ध व प्राचीन है।

यहाँ प्रत्येक वर्ष चैत्र नवरात्र मे मेले का आयोजन होता है। यहां प्राकृतिक छटाओं का भी मनोरम दृश्य है। परन्तु विकास के अभाव में यह स्थान अत्यन्त विकसित नहीं हो पाया है। इस स्थान पर कबीर पंथ का प्राचीन मठ भी स्थित हैं।

यहाँ के मंदिर को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह अत्यन्त प्राचीन है परन्तु जानकारी व शोध के अभाव के कारण वास्तविक तिथि का पता नहीं लगा है।

चूंकि यहाँ शिवनाथ नहीं व जमुनया नाला का संगम है अतः यहाँ पर्यटक पानी का भी आनंद उठा सकते है। यह पिकनिक व पर्यटन के लिए लोक प्रिय स्थलों में से एक है। यहाँ पर महाशिवरात्रि में भव्य मेले का आयोजन होता है।

स्पष्टतः यह अत्यन्त प्राचीन व प्रसिद्ध् स्थल हैं। यह क्षेत्र चारों ओर से प्राकृतिक दृश्यों से आच्छदित है। यहाँ पर मुख्य मंदिर का पुनः निर्माण कार्य किया गया है। पेड़ – पौधों की अधिकता के कारण यहाँ का दृश्य अत्यन्त मनोहारी दिखाई पड़ता है। चूँकी यह स्थल अत्यन्त प्रचलित नही है अतः आसपास के ही पर्यटक यहाँ पर अधिक आते हैं

International Journal of Aquatic Science
ISSN: 2008-8019
Vol 13, Issue 1, 2022

इस प्राचीन व प्राकृतिक के ही पर्यटक यहाँ पर अधिक आते है इस प्राचीन व प्राकृतिक स्थान को और अधिक प्रचार व विकास की आवश्यकता है। यहाँ पर मेले आदि में क्षेत्रीय लोकरीतों व लोकनृत्यों का आयोजन भी देखने को मिलता है

सिद्धेष्वर महादेव

भौगोलिक परिदृष्य

"सिद्धेश्वर मंदिर'' (पलारी) छत्तीसगढ़ राज्य के भौगोलिक स्थिति के अनुसार 21.5387^0N, 82. 1686^0E, पर स्थित है। जिसकी जिला बलौदाबाजार– भाटापारा से दूरी लगभग 17 किमी. है।

खोज के विषय का विवरण :–

बलौदाबाजार से रायपुर मार्ग पर 17 कि.मी. दूर पलारी बालसमुंद के तट पर स्थित सिद्धेश्वर मंदिर प्राचीनतम् मंदिरो में से एक है। कलाशैली की दृष्टि से यह मंदिर 7–8 वीं ईसवी की प्रतीत होती है। बालसमुंद तालाब इस मंदिर की सुंदरता को और भी अधिक भव्य बनाते है। ईटों से निर्मित यह मंदिर पश्चिमाभिमुखी है। मंदिर के गर्भगृह में सिद्धेश्वर नामक शिवलिंग प्रतिष्ठित है। इस मंदिर का शिखर भाग कीर्तिमुखी, गजमुख एवं व्याघ की आकृतियों से अलंकृत है जो चैत्य गवाक्ष के भीतर निर्मित है।

पश्चिम मुखी यह मंदिर लघु अधिष्ठान पर निर्मित है। मंदिर का गर्भगृह पंचस्थ शैली का है। शिखर का शीर्ष भाग पुननिर्मित है। पाषाण निर्मित द्वारा चौखट अत्यन्त कलात्मक एवं अंलकृत है। इसके दोनों ओर देवियों गंगा व यमुना का त्रिमंग मुद्रा में अंकन है। सिरदूल पर ललाट बिंब में शिव का चित्रण है, तथा दोनों छोर में ब्रम्हा तथा विष्णु का अंकन है। मंदिर के सामने लगभग 150 एकड़ में फैला बालसमुंद तालाब अपनी विशालता एवं स्वच्छ निर्मल जल के कारण लोगों के आकर्षण का केन्द्र है। यह तालाब छत्तीसगढ़ में विशाल तालाब अपनी विशालता एवं स्वच्छ निर्मल जल के कारण लोगों के आकर्षण का केन्द्र है। यह तालाब छत्तीसगढ़ में विशाल तालाबों की सूची में शामिल है।

यह स्मारक छत्तीसगढ़ राज्य द्वारा संरक्षित है। इस मंदिर के गर्भगृह में सिध्देश्वर नामक शिवलिंग प्रतिष्ठापित है। इस मंदिर का शिखर भाग कीर्तिमुख, गजमुख एवं व्याल की आकृतियो से अलकृत है जो चैत्य गवास के

भीतर निर्मित है। विद्यामान छत्तीसगढ़ के ईटो से बना है। मंदिर के बगल में एक रंग मंच स्थित है। एवं एक दुर्गा माता का मंदिर, राधा कृष्ण का मंदिर व गुरूघासीदास जी का भी मंदिर है। मंदिर के पास कार्तिक पूर्णिमा के दिन एक मेले का आयोजन होता है। तथा महाशिवरात्रि मे भी भव्य मेले का आयोजन होता है। मंदिर के सामने एक तालाब है। ऐसा कटा जाता है कि यह तालाब छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा तालाब है। तालाब के बीच में एक टापू है। जिसमें मां शारदा का मंदिर है। मंदिर के आसपास सुंदर उद्यान है। जिसमें विभिन्न प्रकार के झुले एवं पेड़–पौधे है।

परन्तु इस प्राचीन व रमणीय स्थल को और अधिक विकास व रखरखाव की आवश्यकता हैं।

सोनबरसा जंगल (नेचर सफारी)

भौगोलिक परिदृष्य

सोनबरसा नेचर सफारी छत्तीसगढ़ राज्य के भौगोलिक स्थिति के अनुसार 21.51914^{0}N 82. 4753^{0}E पर स्थित है। जो बलौदाबाजार–भाटापारा, मुख्यालय से 3 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

खोज के विषय का विवरण :–

बलौदाबाजार से 3 कि.मी. दूर ग्राम पंचायत लटूवा स्थित सोनबरसा रिजर्व फॉरेस्ट को नेचर सफारी के रूप में विकसित किया गया है। इसे पर्यटको को आकर्षित करने हेतु अलग तरह से विकसित किया गया हैं। यहॉ विश्राम गृह जलपान गृह की भी व्यवस्था की गई है। बच्चों के लिए पिकनिक स्पॉट के रूप में विकसित किया गया हैं। यहॉ के जंगल में जंगल सफारी बनाया गया है। जिसमें जिप्सी के द्वारा भ्रमण करने की सुविधा उपलब्ध है। यहाँ पर पर्यटक साइकिलिंग का भी आनंद उठा सकते है। इस सफारी में डियर पार्क भी स्थित है।

जिला मुख्यालय से अत्यन्त निकट होने के कारण यहॉ जाना अत्यन्त ही आसान हैं, व सुविधाजनक है। यहॉ की प्राकृतिक सुन्दरता रमणीय है। बच्चों के मनोरंजन के साथ ही पिकनिक मनाने की अच्छी जगह, वन विभाग बनाई गई है।

सोनबरसा के जंगलों में अनेक प्रकार जानवर दिखाई पड़ते है। परन्तु मुख्यत यहां पर हिरण ज्यादा दिखाई देते है। इसलिए यहाँ डियर पार्क बनाया गया है यहाँ पर रेस्टारेंट भी स्थित है, जहाँ पर पर्यटक खाने का भी आनंद अठा सकते है। बच्चों के लिए पिकनिक हेतु एक सर्वोत्तम स्थान हैं जंगल सफारी का भी अपना अलग ही आनंद है जिसे लोग जिप्सी में जाते हैं तथा जंगल के अंदर प्राकृतिक व मनोरम दृश्यों का आनंद लेते है। जंगल के अंदर जलाशय भी स्थित हैं। जो बहुत ही सुन्दर दिखाई पड़ता हैं। यहाँ पर सितंम्बर अक्टूबर में दृश्य और भी

International Journal of Aquatic Science
ISSN: 2008-8019
Vol 13, Issue 1, 2022

सुघबने दिखाई पड़ते है। परन्तु इस नेचर सफारी को और अधिक विकास व प्रचार की आवश्यकता हैं।

तुरतुरिया (वाल्मिकी आश्रम) ऐतिहासिक व धार्मिक स्थल

भौगोलिक परिदृष्य

''तुरतुरिया'' छत्तीसगढ़ राज्य के भौगोलिक पर स्थित है स्थिति के अनुसार जिसकी जिला मुख्यालय बलौदाबाजार–भाटापारा से दूरी लगभग 29 किमी. है।

खोज के विषय का विवरण :–

तुरतुरिया एक प्राकृतिक एवं धार्मिक स्थल है, जो बलौदा बाजार से 29 कि. मी. कसडोल से 12 कि. मी. दूर स्थित है। उक्त स्थल को सुरसुरी गंगा के नाम से भी जाना जाता हैं। यह स्थल प्राकृतिक दृश्यों से भरा एक मनोरम स्थान हैं जो कि पहाड़ियो से घिरा हुआ हैं। उसके समीप ही बारनवापारा अभ्यारण भी स्थित हैं। तुरतुरिया बहरिया नामक गांव के समीप बलभद्री नाले पर स्थित हैं। जनश्रुति है कि त्रेतायुग में महर्षि वाल्मिकी का आश्रम यही पर था। तथा श्री राम के द्वारा सीता को त्यागने पर सीता जी ने इसी आश्रम में आश्रय लिया था तथा लव कुश का जन्म उसी आश्रम में हुआ था। इस स्थल का नाम तुरतुरिया पड़ने का कारण यह हैं कि बलभद्री नाले का जलपवाह चट्टानों के माध्यम से होकर निकलता है तो उसमें से उठने वाले बुलबुलो के कारण तुरतुर ध्वनि के कारण ही इसे तुरतुरिया नाम दिया गया है। इसका जलप्रवाह एक लम्बी सकरी सुरंग से होता हुआ एक जलकुंड में गिरता हैं। जिसका निर्माण प्राचीन ईटों से हुआ हैं। जिस स्थान पर कुंड में यह जल गिरता हैं वहां पर एक गाय का मुख बना दिया गया है जिसके कारण जल उसके मुख से गिरता हुआ दृष्टिगोचर होता है। इसके अतिरिक्त कुछ शिलालेख भी यहॉ स्थापित है। कुछ भग्न मंदिरों के अवशेष भी मिलते हैं। इस स्थल पर बौद्ध वैष्णव व शैव धर्म से संबंधित मूर्तियों का पाया जाना भी उस तश्य को बल देता है कि यहॉ कभी इन तीनों संप्रदायों ही मिली जुली संस्कृति रही होगी।

आज भी यहाँ मंदिर में स्त्री पुजारिनों की नियुक्ति होती है। जो कि एक प्राचीन काल से चली आ रही परंपरा हैं।

पुष माह में यहाँ तीन दिवसीय मेला लगता हैं तथा बड़ी संख्या में श्रद्धालु यहॉ आते है। धार्मिक व पुरातात्विक स्थल होने के साथ–साथ अपनी प्राकृतिक सुन्दंरता के कारण भी यह स्थल पर्यटकों को आकृर्षित करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. छत्तीसगढ़ का सामाजिक परिदृश्य : सौरभ चतुर्वेदी (युवाचार प्रकाशन)।
2. सेन्ट्रल न्यूज – India.com (Internet)
3. ''छत्तीसगढ़ के मेला और मड़ई'' छत्तीसगढ़ न्यूज मूल से 3 नवंबर 2007 को पुरलेखित, अभिगमन तिथि 31 मार्च 2009.
4. https:// hi.m.wikipedia.org
5. Navbharat Times. अभिगमन तिथि, 2022／05／09.